देशभक्त

पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'

लेखक–परिचय

'उग्र' जी का जन्म सन् 1900 ई. में चुनार, जिला मीरजापुर में एक गरीब ब्राह्मण परिवार में हुआ। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा काशी में हुई स्वतंत्रता आन्दोलन के समय आपके उग्र विचारों के कारण इन्हें विद्यालय से निकाल दिया गया। बड़े भाई के साथ बहुत दिनों तक अयोध्या के महन्तों के साथ रामलीला मण्डली में 'सीता' का अभिनय करते रहे। चाचा की कृपा से पुनः पढ़ाई शुरू हुई किन्तु 1921 में राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेकर जेल चले गये। 1921 से ही 'अष्टावक्र' नाम से कहानियाँ लिखीं। गोरखपुर से स्वदेश पत्रिका निकाली। इसके पहले अंक पर ही अंग्रेज सरकार ने इनके नाम वारन्ट निकाल दिया तो कलकत्ता जाकर 'मतवाला' पत्र का संपादन करने लगे। वहाँ से बम्बई आकर 'साइलेन्ट फिल्म' में लेखक का काम करने लगे किन्तु वहाँ से 'स्वदेश–पत्रिका' के जुर्म में बम्बई से पकड़ कर गोरखपुर लाए गए और छः महीने की सख्त सजा हुई। इनकी 'बुढ़ापा' और 'रुपया' कहानियों के कारण सरकार ने इन्हें पुनः कैद कर लिया। वीणा, स्वराज, विक्रम, संग्राम आदि पत्रों का संपादन इन्होंने क्रमशः किया। इनकी जीवनी 'अपनी खबर' के नाम से प्रकाशित हुई है, जो हिन्दी की अनूठी रचना है। इनके द्वारा लिखे गये 'महात्मा ईसा' नामक नाटक और 'चाकलेट' उपन्यास बहुत चर्चित हुए। उग्र जी की शैली में पौरुष की खनक और स्पष्टवादिता स्पष्ट दिखाई देती है उग्र जी का देशभक्ति का संस्कार अत्यंत प्रखर था।

पाठ–परिचय

प्रस्तुत कहानी में लेखक ने देवलोक के रूपक के माध्यम से देश के लिए सर्वस्व लुटा देने वाले नवयुवक की सृष्टि को विधाता की सर्वाधिक प्रिय सृष्टि बताया है। इसी के माध्यम से देश–सेवा के पथ पर आने वाली कठिनाइयों–दरिद्रता, दुःख चिन्ता आदि को देश–सेवा का ही अभिन्न अंग माना गया है। देश–हित में सभी प्रकार के कष्टों को सहते हुए भी निरंतर सक्रिय रहना और अडिग भाव से देश–सेवा करना ही देश–भक्त का शील–चरित्र है यह चरित्र देव–लोक के लिए भी दुर्लभ एवं स्पृहणीय है। प्रस्तुत कहानी देश–भक्त की जय से गुंजरित अद्‌भुत कहानी है।

**** ****

:: 1 ::

'स्वामिन् आज कोई सुन्दर सृष्टि करो ! किसी ऐसे प्राणी का निर्माण करो जिसकी रचना पर हमें गौरव हो सके। क्यों?

'सचमुच प्रिये, आज तुम्हें क्या सूझा, जो सारा धन्धा छोड़ कर यहाँ आई हो, और मेरी सृष्टि–परीक्षा लेने को तैयार हो?''

''तुम्हारी परीक्षा, और मैं लूँगी? हरे, हरे। मुझे व्यर्थ ही काँटों में क्यों घसीट रहे हो नाथ? यों ही बैठी–बैठी तुम्हारी अद्‌भुत रचना 'मृत्युलोक' का तमाशा देख रही थी। जब जी ऊब गया, तब तुम्हारे पास चली आई हूँ। अब संसार में मौलिकता नहीं दिखाई पड़ती। वही पुरानी गाथा चारों और दिखाई–सुनाई पड़ रही है। कोई रोता है, कोई खिलखिलाता है, एक प्यार करता है दूसरा अत्याचार करता है, राजा धीरे–धीरे भीख माँगने लगता है और भिक्षुक शासन करने लगता है। इन बातों में मौलिकता कहाँ ? इसलिए प्रार्थना करती हूँ कि कोई मनोरंजक सृष्टि सँवारो। संसार के अधिकतर प्राणी तुमको शाप ही देते हैं, एक बार आशीर्वाद भी लो।'

'अच्छी बात है, इस समय चित्त भी प्रसन्न है। किसी से मानव सृष्टि की आवश्यक सामग्री यहीं मँगवाओ। आज मैं तुम्हारे सामने ही तुम्हारी सहायता से सृष्टि करूँगा।

''मैं, तुमको सहायता दूँगी! तब रहने दो, हो चुकी सृष्टि! सृष्टि करने की योग्यता यदि मुझमें होती, तो मैं तुमको कष्ट देने के लिए यहाँ आती ?''

''नाराज क्यों, होती हो भाई! तुमसे पुतला तैयार करने को कौन कहता है ? तुम यहाँ चुपचाप बैठी रहो। हाँ, कभी–कभी मेरी ओर, मेरी कृति की ओर अपने मधुर कटाक्ष को फेर दिया करना। तुम्हारी इतनी–सी सहायता से मेरी सृष्टि में जान आ जाएगी, समझी ?''

''समझी। देखती हूँ, तुम्हारी आदत भी कलियुगी बूढ़ों–सी हुई जा रही है। अभी तक आँखों में जवानी का नशा छाया हुआ है।''

''और तुम्हारी आदत तो बहुत अच्छी हुई जा रही है। वे हँसे और बोले–चलो, जल्दी करो, सब चीजें मँगवाओ।''

:: 2 ::

क्षिति, जल, अग्नि, आकाश और पवन के सम्मिश्रण से विधाता ने एक पुतला तैयार किया। इसके बाद उन्होंने सबसे पहले तेज को बुला कर उस पुतले में प्रवेश करने को कहा। इस के बाद सौन्दर्य, दया, करुणा, प्रेम, विद्या, बुद्धि–बल, संतोष–साहस, उत्साह–धैर्य–गम्भीरता आदि समस्त गुणों से उस पुतले को सजा दिया। अन्त में आयु और भाग्य की रेखाएँ बनाने के लिए ज्यों ही विधाता ने लेखनी उठायी त्यों ही ब्रह्माणी ने रोका– ''सुनिए भी, इसके भाग्य में क्या लिखने जा रहे हैं, और आयु कितनी दीजियेगा?''

''क्यों? तुमको इन बातों से क्या मतलब? तुम्हें तो तमाशा–भर देखता है, वह देख लेना। भौहें तनने लगीं न। अच्छा लो सुन लो। इसके भाग्य में लिखी जा रही है, भयंकर दरिद्रता, दुःख, चिन्ता और इसकी आयु होगी बीस वर्षों की!''

''अरे! यह क्या तमाशा कर रहे हैं? बल, साहस, दया, तेज, सौन्दर्य, विद्या, बुद्धि आदि गुणों को देने के बाद दरिद्रता, दुःख, चिन्ता आदि को देने की क्या आवश्यकता है? फिर सृष्टि को देख कर लोग आपकी प्रशंसा करेंगे या गालियाँ देंगे? फिर केवल बीस वर्षो की अवस्था! इन्हीं कारणों से मृत्यु–लोक

के कवि आपकी शिकायत करते हैं। क्या फिर किसी से ''नाम चतुरानन पै चूकते चले गये! लिखवाने का विचार है?''

विधाता ने मुस्कराकर कहा–''अब तो रचना हो गयी। चुपचाप तमाशा भर देखो। इसकी आयु इसलिए कम रखी है जिससे तमाशा जल्द दिखाई पड़े।''

ब्रह्माणी ने पूछा–''इसे मृत्यु–लोक वाले किस नाम से पुकारेंगे?''

प्रजापति ने गर्व–भरे स्वर से उत्तर दिया – 'देशभक्त।'

:: 3 ::

अमरावती से इन्द्र ने, कैलाश से शिव ने, बैकुण्ठ से कमलापति ने संसार–रंगमंच पर देशभक्त का प्रवेश उस समय देखा, जब उसकी अवस्था उन्नीस वर्ष की हो गई। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं। देव–मण्डली का एक–एक दिन हमारी अनेक शताब्दियों से भी बड़ा होता है। हमारे उन्नीस वर्ष तो उनके कुछ मिनटों से भी कम थे।

देशभक्त के दर्शनों से भगवान प्रसन्न होकर नाचने लगे। उन्होंने अपनी प्राणेश्वरी पार्वती का ध्यान देशभक्त की ओर आकर्षित करते हुए कहा – ''देखो, यह सृष्टि की अभूतपूर्व रचना है। कोई भी देवता देशभक्त के रूप में नरलोक में जाकर अपने को धन्य समझ सकता है, प्रिये इसे आशीर्वाद दो।'' प्रसन्नवदना उमा ने कहा– ''देशभक्त की जय हो!''

एक दिन देशभक्त के तेजपूर्ण मुखमंडल पर अचानक कमला की दृष्टि गई। उस समय यह (देशभक्त) हाथ में पिस्तौल लिये किसी देश–द्रोही का पीछा कर रहा था। इन्दिरा ने घबराकर विष्णु को उसकी और आकर्षित करते हुए कहा – ''यह कौन है? मुख पर इतना तेज ऐसी पवित्रता और करने जा रहा है, राक्षसी कर्म–हत्या! यह कैसी लीला है?'' लीलाधर विष्णु ने कहा ''चुपचाप देखो। 'परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दृष्कृताम्, धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे–युगे' यदि वह देशभक्त–राक्षसों का काम करने जा रहा है। देवी, इन्हें प्रणाम करो! यह कर्ता की पवित्र कृति है।''

हाथ की पिस्तौल देश–द्रोही के मस्तक के सामने कर, देशभक्त ने कहा – 'मूर्ख पश्चाताप कर, देश–द्रोह से हाथ खींच कर मातृ–सेवा की प्रतिज्ञा कर! नहीं तो मरने के लिए तैयार हो जा।'

देश–द्रोही के मुख पर घृणा और अभिमान भरी मुस्कराहट दौड़ गयी। उसने शासन के स्वर में उत्तर दिया –

'अज्ञानी, सावधान! हम शासकों के लाड़ले हैं। हमारे माँ–बाप और ईश्वर, सर्वशक्तिमान 'सम्राट' हैं। 'सम्राट' के सम्मुख देश की बड़ाई।'

'अन्तिम बार पुनः कह रहा हूँ, 'माता की जय' बोल, अन्यथा इधर देख!' देशभक्त, की पिस्तौल गरजने के लिए तैयार हो गयी।

सिर पर संकट देखकर देश–द्रोही ने अपनी जेब से सीटी निकाल कर जोर से बजाई। जान पड़ता है देश–द्रोहियों का दल देशभक्त की ओर लपका। फिर क्या था, देशभक्त की पिस्तौल गरज उठी। क्षण–भर में देश–द्रोहियों का सरदार, कबूतर की तरह पृथ्वी पर लौटने लगा। गिरफ्तार होने से पूर्व सफल–प्रयत्न, देशभक्त आनन्द विभोर होकर चिल्ला उठा, 'माता की जय हो।'

काँपते हुए इन्द्रासन ने, पुष्पवृष्टि करते हुए नन्दन–कानन ने, तांडव–नृत्य में लीन रूद्र ने, कल–कल करती हुई सुरसरिता ने एक स्वर से कहा – 'देशभक्त की जय हो।'

विधाता प्रेम–गद्‌गद् होकर ब्रह्माणी से बोले– 'देखती हो, देशभक्त के चरण स्पर्श से अभागा

कारागार अपने को स्वर्ग समझ रहा है। लोहे की कड़ियों –हथकड़ी–बेड़ियों ने मानो पारस पा लिया है, संसार के हृदय में प्रसन्नता का समुद्र उमड़ रहा है, वसुन्धरा फूली नहीं समाती! यह है मेरी कृति, यह मेरी कृति, यह है मेरी विभूति! प्रिय गाओ, मंगल मनाओ, आज मेरी लेखनी धन्य हुई।'

:: 4 ::

जिस दिन देशभक्त की जवानी का अन्तिम पृष्ठ लिखा जाने वाला था उस दिन स्वर्गलोक में आनन्द का अपार पारावर उमड़ रहा था। त्रिंश कोटि देवांगनाओं की थालियों को उदार कल्पवृक्ष ने अपने पुष्पों से भर दिया था, अमरावती ने अपना अपूर्व शृंगार किया था, चारों ओर मंगल–गान गाए जा रहे थे।

समय से बहुत पहले देवतागण विमान पर आरूढ़ हो कर आकाश में विचरने और देशभक्त के आगमन की प्रतीक्षा करने लगे।

सम्राट के समर्थक भीषण शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित होकर एक बड़े मैदान में खड़े थे। देशभक्त पर 'सम्राट के प्रति विद्रोह' का अपराध लगा कर न्याय का नाटक खेला जा चुका था। न्यायाधीश की यह आज्ञा सुनाई जा चुकी थी कि 'या तो देशभक्त अपने कर्मों के लिए पश्चाताप प्रकट कर सम्राट की जय घोषणा करें या तोप से उसे उड़ा दिया जाए।' देशभक्त पश्चाताप क्या करता? अतः सम्राट के सैनिकों ने जंजीर में कसकर तोप के सम्मुख खड़ा कर दिया।

सम्राट के प्रतिनिधि ने कहा –

'अपराधी! न्याय की रक्षा के लिए अंतिम बार फिर कहता हूँ – 'सम्राट की जय' घोषणा का पश्चाताप कर ले।''

मुस्कराते हुए देशभक्त बन्दी ने कहा–

''तुम अपना काम करो, मुझसे पश्चाताप की आशा व्यर्थ है। तुम मुझसे 'सम्राट की जय' कहलाने के लिए क्यों मरे जा रहे हो? सच्चा सम्राट कहाँ है? तुम्हारे कहने से संसार के लुटेरों को मैं कैसे सम्राट मान लूँ? सम्राट मनुष्यता का द्रोही हो सकता है? सम्राट न्याय का गला घोंट सकता है? सम्राट रक्त का प्यासा हो सकता है? भाई तुम जिसे सम्राट कहते हो, उसे मनुष्यता के उपासक 'राक्षस' कहते हैं। फिर सम्राट की जय – घोषणा कैसी ? तुम मुझे तोप से उड़ा दो– इसी में सम्राट का मंगल है, इसी से पापों का घड़ा फूटेगा और उसे मुक्ति मिलेगी।''

देव–मण्डल के बीच बैठी हुई माता मनुष्यता की गोद में बैठकर देशभक्त ने और साथ ही त्रिंश कोटि देवताओं ने देखा, पंचतत्त्व के एक पुतले को अत्याचार के उपासकों ने तोप से उड़ा दिया।

उस पुतले के एक – एक कण को देवताओं ने मणि की तरह लूट लिया। बहुत देर तक देवलोक 'देशभक्त की जय' से मुखरित रहा।

शब्दार्थ–

क्षिति– पृथ्वी,	सृष्टि– संसार, जगत,	विधाता– ईश्वर,
परित्राणाय–पूर्ण रक्षा के लिए	दुष्कृत्य– बुरा कार्य,	त्रिंश– तीस,
कोटि–करोड़,	पंचतत्त्व– पृथ्वी, आकाश, वायु, जल, अग्नि	
दृष्टि–नजर,	लीन–रत,	आरूढ़– चढ़ा हुआ,

विचरण– घूमना, विद्रोह– हानि पहँचाने के विचार से किया गया कार्य

द्रोही– दुश्मन, उपासक– भक्त

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. ''देवी इन्हें प्रणाम करो। यह कर्ता की पवित्र कृति है।'' लीलाधर विष्णु ने देशभक्त के किस कर्त्तव्य की ओर इन्दिरा का ध्यान आकृष्ट किया–

   (क) नृशंसता (ख) देश द्रोह

   (ग) लोक–रक्षा (घ) शौर्य ( )

2. 'देशभक्त पर 'सम्राट के प्रति विद्रोह' का अपराध लगाकर न्याय का नाटक खेला जा चुका था।' न्यायाधीश ने देशभक्त को क्या आज्ञा सुनाई–

   (क) वह देशद्रोह के अपराध में पश्चात्ताप करे।

   (ख) वह 'सम्राट की जय' बोले।

   (ग) वह सम्राट की जय बोलकर पश्चात्ताप करे।

   (घ) वह मृत्यु या सम्राट – भक्ति दोनों में से एक मार्ग चुने। ( )

3. पंचतत्व का पुतला किसे कहा गया है–

   (क) पर्वत (ख) सागर

   (ग) मानव (घ) पक्षी ( )

4. देशभक्त के स्पर्श से कौन सा अभागा स्थल पवित्र हो जाता है–

   (क) महल (ख) कारागार

   (ग) चरागाह (घ) झोंपड़ा ( )

लघूत्तरात्मक प्रश्न–

1. 'क्या फिर किसी से नाम चतुरानन पै चूकते चले गये। लिखवाने का विचार है ?' ब्रह्माणी ने विधाता की किस बात पर यह व्यंग्योक्ति की ?
2. विधाता प्रेम–गद्‌गद् होकर ब्रह्माणी से बोले – ''देखती हो, देशभक्त के चरण–स्पर्श से अभागा कारागार अपने को स्वर्ग समझ रहा है।'' यहाँ कारागार को उग्र जी ने अभागा क्यों कहा ?
3. जिस दिन देशभक्त के जीवन का अन्तिम पृष्ठ लिखा जाने वाला था – उस दिन स्वर्ग–लोक में आनन्द का अपार पारावार क्यों उमड़ रहा था ?
4. तुम अपना काम करो, मुझसे पश्चात्ताप कराने की आशा व्यर्थ है। कहते समय देशभक्त के मनः स्थित संकल्प को स्पष्ट कीजिए।
5. 'अच्छी बात है, इस समय चित्त भी प्रसन्न है। किसी से मानव–सृष्टि की आवश्यक सामग्री यहीं मँगवाओ।' विधाता के अनुसार वे आवश्यक सामग्रियाँ कौन सी हैं ?

निबंधात्मक प्रश्न–

1. ''समझी। देखती हूँ, तुम्हारी आदत भी कलियुगी बूढ़ों–सी हुई जा रही है।'' इस कथन से बूढों के किन लक्षणों की ओर ध्यान आकृष्ट किया जा रहा है ?
2. इस कहानी में जिस राम–कृष्णादि महापुरुषों को उद्धृत किया गया है, उनके लोक–हितकारी कर्तव्यों पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए।
3. 'पंचतत्व के एक पुतले को अत्याचार के उपासकों ने तोप से उड़ा दिया।' देवताओं पर इस बलिदान की क्या प्रतिक्रिया हुई और क्यों ?
4. 'अच्छा सुन लो! इसके भाग्य में लिखी जा रही है भयंकर दरिद्रता, दुःख, चिन्ता और इसकी आयु होगी बीस वर्षों की।' देशभक्ति के इस कष्टसाध्य जीवन–दर्शन पर अपने विचार सौ शब्दों में प्रकट कीजिए।

*****